दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-II (प्रश्नपत्र-1)

DTVF/19(N-M)-HL-**HL2**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): संदीप कुमार पटेल

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 29/07/2019

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2019] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2019]:

0	7	9				

विद्यार्थी के हस्ताक्षर
(Student's Signature): Sandeep

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ____________ टिप्पणी (Remarks): ____________

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) तारसप्तक

हिन्दी कविता के इतिहास में 'तारसप्तक' का महत्वपूर्ण योगदान है क्योंकि इसके प्रकाशन से कविता में एक नये युग 'प्रयोगवाद' का आरंभ माना जाता है।

वस्तुतः 'तारसप्तक' का प्रकाशन 'अज्ञेय' द्वारा सन् 1943 ई. में किया गया। इसमें सात कवियों जिनमें स्वयं अज्ञेय, मुक्तिबोध, रामविलास शर्मा आदि की कविताओं का संकलन था।

'प्रयोगवादी' कविताओं की विशेषता यह थी कि ये कवि साहित्य में किसी एक विचारधारा या शैली के पक्षधर नहीं थे बल्कि नये प्रयोगों के माध्यम से मानव की सृजन की क्षमताओं को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

परिष्कृत करने में विश्वास रखते थे।

चूँकि हिन्दी में तब तक प्रगतिवादी कविताओं का दौर चल रहा था जहाँ मार्क्सवादी समाजवादी विचारधारा के आधार पर काव्य का मूल्यांकन होता था, किंतु ये कवि वैयक्तिकता को महत्व देते हैं तथा किसी एक विचारधारा में नहीं बँधना चाहते हैं।

प्रयोगवादी कवि चली आ रही उपमाओं, शैलियों, परंपराओं से भी आगे जाना चाहते हैं -

"ये उपमान मैले हो गये हैं
देवता इन प्रतीकों के कर गये हैं कूच।"

इस प्रकार तारसप्तक का प्रकाशन हिन्दी कविता में एक नये युग के सूत्रपात करने में महत्वपूर्ण रहा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) हिन्दी साहित्येतिहास को ग्रियर्सन की देन

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

हिन्दी साहित्येतिहास के इतिहास लेखन की औपचारिक एवं विधिवत लेखन का जनक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन को माना जाता है जो कोर्ट विलियम कॉलेज में प्रोफेसर थे। इन्होंने अपने ग्रंथ 'द मार्डन वर्नाकुलर लिटरेचर ऑफ नार्दन हिन्दुस्तान' के माध्यम से हिन्दी साहित्येतिहास लेखन का सूत्रपात किया।

ग्रियर्सन से पहले जो साहित्य का इतिहास लिखा गया उसमें स्पष्ट इतिहास बोध का अभाव था। पहली बार ग्रियर्सन ने एक विधिवत इतिहास बोध एवं कालविभाजन के माध्यम से इतिहास का प्रणयन किया।

किंतु ग्रियर्सन का इतिहास बोध कहीं कहीं सांप्रदायिकता से जुड़ जाता है। उन्होंने चुकी कबियों, फारसी भाषा को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anythirg except the question number in this space)

हिन्दुस्तानी ये श्रेष्ठ बताया तथा कालविभाजन भी यादृच्छिक रखा। कहीं-कहीं व्यक्ति-विशेष नाम, ~~जैसे~~ कहीं-कहीं यादृच्छिक नाम रखा जैसे - सल्तनत काल, भक्तिकाल आदि।

ग्रियर्सन से सबसे पहले भक्तिकाल को स्वर्णयुग की संज्ञा दी थी जो आज भी मान्य है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विद्यापति की सौंदर्य-चेतना

हिन्दी साहित्य में विद्यापति को राधा-कृष्ण काव्य धारा का प्रारंभकर्ता माना जाता है जिसकी परंपरा में आगे चलकर सूर, बिहारी जैसे कवियों ने कृष्ण भक्ति काव्य की रचना की।

विद्यापति के ग्रंथ पदावली में राधा- कृष्ण के संयोग, विरह, प्रेम का मार्मिक एवं कलात्मक वर्णन किया गया है। 'पदावली' को कुछ विद्वान भक्ति के पद तो कुछ पूर्णतः श्रृंगार के पद मानते हैं।

विद्यापति की सौंदर्य चेतना पदावली में नजर आती है जहाँ राधा का सौंदर्य बिजली की चमक के समान है।

उनके यहाँ राधा- कृष्ण के प्रेम का अत्यंत सुंदर वर्णन मिलता है। राधा कृष्ण के प्रेम में इतनी मग्न है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उनके रूप को देखकर मोहित हो गयी हैं। वो कहती हैं कि ऐसा रूप स्वप्न में भी नहीं देखा है।

- "हे सखि देखल एक अपरूप,
सुनइत सपनेहुँ मानबि सपनि सरूप।"

विद्यापति के यहाँ कृष्ण भी राधा के विरह में दुखी है एवं प्रेम के बिना जीवन को निरर्थक बताते हैं।

- "राह रहल हम दुर मधुरापुर, एतहु सहए प्रान।"

इस प्रकार विद्यापति ने श्रृंगार की विशद् अभिव्यक्ति की है जिसे आगे हिन्दी कविताओं में सूरदास के यहाँ देखा जा सकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) अष्टछाप

अष्टछाप की स्थापना ~~रामानुज~~ वल्लभाचार्य के पुत्र विट्ठलनाथ ने की थी जो कृष्ण भक्ति के गीतों से संबंधित कवियों का समूह था। इसमें वल्लभाचार्य के 4 शिष्य सूरदास, परमानंददास, कुंभन-दास, कृष्णदास तथा विट्ठल के 4 शिष्य सुंदरदास, छीतस्वामी, गोविन्द-स्वामी एवं रामदास थे।

अष्टछाप के कवि कृष्ण भक्ति के पद गाते थे एवं वल्लभ के विशिष्टाद्वैतवाद दर्शन से प्रभावित थे जिसके अनुसार यह संसार ईश्वर का प्रतिबिंब है एवं भक्ति के माध्यम से ही ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। पुष्टिमार्ग

अष्टछाप के कवि '~~पुष्टिमार्ग~~' को मानते थे जहाँ 'मोरी कौन गति ब्रजनाथ' की अवधारणा प्रचलित थी अर्थात् ईश्वर ही समस्त कर्ता है और ईश्वर के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अनुग्रह से मुक्ति प्राप्त होती है-
'पोषणं तत् अनुग्रह'।

अष्टछाप के सर्वप्रमुख कवि सूरदास थे जो पहले दास भक्ति करते थे किंतु वल्लभाचार्य के कहने पर सख्य भक्ति के पद गाने लगे -

- 'सूर ह्वै के काहे घिघियात हो।'

अष्टछाप के सभी कवियों ने कृष्ण की लीलाओं, भक्ति एवं श्रृंगार आदि की रचनाएँ की। परमानंददास का यह पद ~~[illegible]~~ द्रष्टव्य है -

- "मोहन वह क्यों प्रीति बिसारी,
कहत सुनत समुझत उर अंतर दुख लागत है भारी।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवि सुंदरदास

हिन्दी साहित्येतिहास की के भक्तिकाल में सुंदरदास सगुण कृष्ण भक्ति धारा के अंतर्गत आते हैं। यह अष्टछाप कवियों में से एक थे अतः इन पर वल्लभ के विशिष्टाद्वैतवाद एवं पुष्टिमार्ग का प्रभाव था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'हिन्दी सूफी काव्यधारा ने हिन्दुओं व मुसलमानों को साहचर्य व प्रेम में रहने की मानसिकता प्रदान की।' इस मत का अनुशीलन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मध्यकाल में इस्लाम के आगमन के साथ ही भारत में सूफी संतों एवं उनके विचारों का भी प्रवेश हुआ। सूफी संत इस्लाम के अंदर लचीलापन, एवं बहिर्मुखी रहस्यवाद के तत्व लेकर आये थे जो भारतीय उपनिषदीय चिंतन से संबंधित थे।

वस्तुतः सूफी काव्य धारा में 'तसव्वुफ' के माध्यम से खुदा की प्राप्ति पर बल दिया जाता है। 'तसव्वुफ' की यह अवधारणा 'इश्क मजाजी' अर्थात् लौकिक प्रेम से 'इश्क हकीकी' अर्थात् अलौकिक प्रेम तक जाती है जहाँ बंदा एवं खुदा का मिलन होता है और बंदा फना एवं बका की प्राप्ति करता है।

तसव्वुफ की यह अवधारणा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारतीयों के लिए कहीं न कहीं परिचित थी अतः संत कवि भी सूफी रहस्यवाद को अपनी रचनाओं में अपनाते हैं। उदाहरण के लिये कबीर का दोहा -

- "जो बिछुड़े हैं पियारे से भटकते दर बदर फिरते
हमारा यार है हममें हमन को इंतजारी क्या।"

सूफी कवियों ने प्रायः समन्वयवादी दृष्टि अपनाते हुये भारतीय लोकजीवन में प्रचलित कथानकों, प्रेम कहानियों के माध्यम से अपने मत की ~~अभिव्यक्ति~~ अभिव्यक्ति की। जैसे - पद्मावत में जायसी ने लोक प्रचलित पद्मिनी की कहानी का कथानक लिया।

यही समन्वयवादी दृष्टि अपनाते हुये इन कवियों ने ठेठ अवधी भाषा में रचना की एवं फारसी लिपि का प्रयोग किया फलतः हिन्दु एवं मुस्लिम दोनो इन रचनाओं के प्रति अपनत्व का भाव रखते थे। निम्न लिखित ~~पद~~ ठेठ अवधी का है -

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

- " यह तन जारौं छार के, कहौं कि पवन उड़ाव।
मकु तेहि मारग उड़ि पड़ै, कंत धरै जहाँ पाँव।"

सूफी कवियों ने 'प्रेम की पीर' को जीवन का मूल्य बताया तथा हिन्दू-मुस्लिम 'सामासिक संस्कृति' के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी कविताएँ प्रेम को जीवन का सार बताती हैं -

- " मानुस प्रेम भएउ बैकुण्ठी,
नाहिं तो काह छार एक मूँठी।"

सूफी कवियों ने प्रकृति के कण-कण में खुदा की अभिव्यक्ति को स्वीकार किया। यह विचार भारतीय हिन्दुओं के मन को आसानी से समझ में आता है। इन कवियों ने प्रकृति का रमणीय चित्रण किया है तथा मनुष्य एवं प्रकृति के सहज साहचर्य की भावना को प्रकट किया।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार सूफी कवियों ने भारतीय जनमानस में हिन्दू-मुस्लिम के मध्य प्रेम व सौहार्द्य का बीजारोपण उस समय किया जब दोनों संस्कृति 'आरंभिक अवस्था में एक-दूसरे के साथ सामने आयीं थीं। यह सूफी कवियों की कविताओं का ही परिणाम है कि आज भारत में सामासिक संस्कृति का निर्माण हो सका।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'सरोज-स्मृति' की 'सरोज' के सौन्दर्य-चित्रण को हिन्दी साहित्य की विशिष्ट उपलब्धि क्यों माना जाता है? सोदाहरण बताइए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'सरोज-स्मृति' की रचना हिन्दी साहित्य के महान छायावादी रचनाकार सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने की थी। 'सरोज-स्मृति' में वे ~~उनकी~~ दिवंगत पुत्री 'सरोज' के प्रति अपनी स्मृति, दुख का बड़ा ही विशद एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करते हैं। इस कारण इसे हिन्दी साहित्य में अमर कृति माना जाता है।

'सरोज-स्मृति' एक विशिष्ट रचना है। इसकी पहली विशेषता है कि पहली बार एक पिता ने अपनी पुत्री की स्मृतियों के लिये कविता की रचना की। यह अपने तरह की पहली रचना है जहाँ निराला अत्यंत 'प्रगतिात्मक शैली' में अपनी विरह वेदनाओं, अपनी असमर्थता को प्रकट करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

उनकी बेटी सरोज को आर्थिक कारणों से दुनिया से विदा होना पड़ा, इस पीड़ा से निराला अत्यंत विक्षिप्त थे और उनकी संपूर्ण पीड़ा इस काव्य में नजर आती है।

सरोज-स्मृति में निराला अपनी पुत्री के बचपन को याद करते हुये उसकी बाल्य चेष्टाओं, बचपन की सुंदर यादों का विशद चित्रण इतने सघन तरीके से करते हैं कि पाठक निराला के दुख को स्वयं का दुख महसूस करने लगता है।

हिन्दी साहित्य में सरोज स्मृति अपनी विरह की सघनता, तीव्र भावों की उपस्थिति तथा यथार्थपूर्ण जीवन की कठिनाइयों को मार्मिक तरीके से प्रस्तुत करने के लिये जानी जाती है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

3. (क) "आध्यात्मिक रंग के चश्मे आजकल बहुत सस्ते हो गए हैं। उन्हें चढ़ाकर जैसे कुछ लोगों ने गीतगोविन्द को आध्यात्मिक संकेत बताया है, वैसे ही विद्यापति के इन पदों को भी।" इस मत के आलोक में विद्यापति-पदावली के पदों की मूल चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

शुक्ल जी का यह कथन विद्यापति की पदावली को लेकर है जिसमें वे ग्रियर्सन आदि विद्वानों पर आक्षेप करते हैं। चूँकि ग्रियर्सन एवं अन्य विद्वानों ने पदावली को मूलतः भक्ति की रचना माना है तथा निम्नलिखित तर्क दिये हैं-

(क) पदावली में राधा-कृष्ण प्रतीक के रूप में है। कृष्ण परमात्मा हैं तथा राधा जीवात्मा है, एवं परमात्मा से जीवात्मा के मिलन की तड़प को विद्यापति ने व्यक्त किया है।

(ख) विद्यापति भक्त कवि हैं क्योंकि उनके बाद के रचनाकार उन्हें भक्त के रूप में ही स्मरण करते हैं न कि कवि के रूप में।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) विद्यापति के पद मूलतः भक्तिपरक है क्योंकि यह मंदिरों में गाये जाते थे तथा इन्हें सुनकर चैतन्य महाप्रभु भी बेहोश हो जाते थे।

उपरोक्त तर्कों का खंडन आचार्य रामचंद्र शुक्ल, रामकुमार वर्मा आदि समीक्षकों ने किया तथा उन्होंने निम्न-लिखित तर्क दिये –

(क) विद्यापति शैव भक्त थे अतः यदि उन्हें भक्ति करनी है तो शिव की करनी चाहिये थी।

(ख) विद्यापति के पदों में 'राधा-कन्हाई को तो बहाना है' वस्तुतः उनके पदों में राजा शिवसिंह एवं रानी के मिलन का वर्णन अधिक है क्योंकि कई पदों में उनका नाम उल्लेखित है।

वस्तुतः विद्यापति के पदों को न तो पूर्णतः शृंगारपरक माना जा सकता है और

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

न ही पूर्णतः भक्तिपरक। अतः उनके पदों को भक्ति युक्त श्रृंगार मानना चाहिए।

विद्यापति ने पदावली में राधा-कृष्ण के संयोग एवं वियोग दोनों का विशद् चित्रण किया है। उनकी भाषा मैथिली है। विद्यापति की राधा कृष्ण के प्रेम रूप पर इतनी मोहित है कि उन्हें जिंदगी भर देख सकती हैं।

"हे सखि देखल एक अपरूप,
सुनइत मानवि सपनि सरूप।"

राधा को कृष्ण की वाणी मधुर लगती है - 'माधव बोलत मधुरी बानी'। कृष्ण भी राधा के प्रेम में विरह से शोकाकुल है -

"राहि रहल हम दुर मधुरापुर,
एतहु सहए परान।"

इस प्रकार पदावली की मूल चेतना

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

शृंगार परक है जहाँ संयोग एवं विरह दोनों का विवेचन है किंतु कुछ पदों में भक्ति का पुट भी मिलता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: $10 \times 5 = 50$

(क) 'कविवचन सुधा' पत्रिका

हिन्दी साहित्येतिहास के युगपुरुष एवं कालजयी रचनाकार भारतेंदु हरिश्चंद्र बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने साहित्य में कविता, निबंध, नाटक के साथ पत्रकारिता के क्षेत्र में अभूतपूर्व योगदान दिया।

'कविवचन सुधा' पत्रिका भारतेंदु हरिश्चंद्र द्वारा संपादित प्रमुख पत्रिका थी जिसके माध्यम से वे अपने काव्य, इतिहास एवं तत्कालीन राजनीतिक - सामाजिक विचारों का प्रणयन करते थे।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ऐसे समय के रचनाकार एवं पत्रकार हैं जब भारत संक्रमणकालीन दशाओं से गुजर रहा था। 17वीं सदी में डेकार्ट, जॉन लॉक के विचारों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के माध्यम से जिन आधुनिकता संबंधी विचारों का सूत्रपात यूरोप में हुआ वह नवजागरण के माध्यम से भारत में भी पहुँचे।

भारतेंदु आधुनिकता के समर्थक थे साथ ही वे भारतीय इतिहास के गौरव से भी परिचित थे।

- "सबसे पहले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।"

इसके साथ ही उन्होंने पश्चिम के विज्ञान, तर्क, स्वतंत्रता के मूल्यों का समर्थन किया।

- "भारतेंदु एक महान साहित्यकार एवं पत्रकार थे तथा उनके विचारों को पहुँचाने तथा जनजागरूकता में 'कविवचन-सुधा' का महत्वपूर्ण योगदान है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation